वेदोऽखिलोधर्ममूलम्

वेद प्रकाश

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

मासिक पत्र मूल्यः ५ रुपये अगस्त २०१४

कुल पृष्ठ संख्या २०, वजनः 40 ग्राम
प्रकाशन तिथिः 4 अगस्त 2014

अन्तःपथ

जन्मपत्री तथा भविष्यवाणियाँ (पं. मनसाराम वैदिक तोप)	३ से ११
गोसेवक बाबू हासानन्द वर्मा (हासानन्दात्मज गोविन्दराम आर्य)	११ से १८

हे ईश्वर.....

इतनी ऊँचाई न देना प्रभु की,
धरती पराई लगने लगे।
इतनी खुशियाँ भी न देना कि,
दुःख पर किसी के हँसी आने लगे।
नहीं चाहिए ऐसी शक्ति जिसका,
निर्बल पर प्रयोग करूँ।
नहीं चाहिए ऐसा भाव कि,
किसी को देख जल-जल मरूँ।
ऐसा ज्ञान मुझे न देना,
अभिमान जिसका होने लगे।
ऐसी चतुराई भी न देना जो,
लोगों को छलने लगे।

बोधकथा

यथा योग्य व्यवहार

महाभारत का प्रसंग है। जरासंध के वध के बाद युधिष्ठिर ने राजसूय यज्ञ करने का संकल्प किया। युधिष्ठिर के चारों भाइयों ने आसपास के सभी प्रदेशों, राज्यों और देशों पर विजय पाई। इंद्रप्रस्थ में राजसूय का आयोजन किया गया। हस्तिनापुर से भीष्म, द्रोणाचार्य, दुर्योधन और उसके भाई आए। युधिष्ठिर की दीक्षा के बाद अर्घ्य देने का समय आया। भीष्म ने कहा, "आचार्य ऋत्विज, संबंधी, स्नातक, राजा को अर्घ्य दिया जाता है।" युधिष्ठिर द्वारा जिज्ञासा करने पर भीष्म ने कहा, "उपस्थित सज्जनों में ही नहीं, पृथिवी भर में कृष्ण ही अर्घ्य के अधिकारी हैं।"

आमंत्रित राजाओं में चेदिराज शिशुपाल ने इस प्रस्ताव का विरोध किया और कहा, "कृष्ण राजा नहीं, राजाओं के रहते हुए इन्हें अर्घ्य क्यों दिया गया, फिर यहाँ उसके पिता वसुदेव भी आए हैं, पिता के होते पुत्र पूजा का पात्र कैसे?" शिशुपाल ने युधिष्ठिर को भी जली-कटी सुनाई, कृष्ण को खूब बुरा कहा। उसने राजाओं को भी उभारा और अपनी कमान में लड़ने के लिए कहा।

भीम क्रुद्ध थे, शिशुपाल भी क्रुद्ध था। भीष्म ने सबको रोका और शिशुपाल को जली-कटी सुनाई। अंत में शिशुपाल ने कृष्ण को सीधा ललकारा, कहा, "तू दास है, राजा नहीं। हम तेरा अर्घ्य लेना नहीं सहेंगे, तुम में शक्ति है तो मुझसे लड़ लो। अभी तुझे पांडवों समेत यमपुरी का रास्ता दिखा दूँ।"

सभी दुर्वचनों पर कृष्ण चुप रहे, वह शिशुपाल के क्रूद्ध होने की परवाह नहीं कर रहे थे, परंतु जब शिशुपाल ने युद्ध का स्पष्ट आह्वान किया तो चुप रहना भीरुता होती। श्रीकृष्ण ने पहले राजाओं को संबोधित कर शिशुपाल की पुरानी करतूतें सुनाईं और कहा, "मैंने फूफी के कहने पर इसके सौ अपराध क्षमा किए। आखिर क्षमा की भी हद होती है। हम प्राग्ज्योतिष गए थे, इसने पीछे द्वारिका जला दी। मैंने फूफी के लिहाज से अब तक इसकी उपेक्षा की, आखिर कब तक उपेक्षा की जाए। यह तो युधिष्ठिर का धर्म-साम्राज्य ही चौपट करना चाहता है। यह व्यतिक्रम असह्य है।"

श्रीकृष्ण द्वारा सारा वृत्तांत सुनकर राजा भी शिशुपाल से घृणा करने लगे। लोकमत के अपने पक्ष में आते ही श्रीकृष्ण का संकोच खत्म हो गया और उन्होंने सुदर्शन चक्र से शिशुपाल का सिर काट डाला।

वेदप्रकाश

संस्थापक : **स्वर्गीय श्री गोविन्दराम हासानन्द**

वर्ष ६४ अंक ०१ वार्षिक मूल्य : तीस रुपये, एक प्रति ५ रुपये, अगस्त, २०१४

सम्पा॰ **अजयकुमार** पूर्व सम्पादक : स्व॰ **स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती**

जन्मपत्री तथा भविष्वाणियाँ

लेखक—***पं० मनसाराम वैदिक तोप***

कहते हैं कि पंजाब में एक झल्लन नाम का जाट था। उसका पुत्र रोग्रस्त हो गया। उसके मन में यह विचार उत्पन्न हुआ कि अब डॉक्टरों को कौन बुलाता फिरेगा! डॉक्टरों की फीस तथा ओषधियों का मूल्य मैं सहन नहीं कर सकूँगा। ये जो गंडे-तावीज़ करने वाले स्याने होते हैं, उनके पास चलो, उनसे कोई गंडा-तावीज़ ले आवेंगे और लड़के को आराम हो जायेगा। यह सोचकर झल्लन स्याने के मुहल्ले में गया तो क्या देखता है कि उस तावीज़ देने वाले के अपने ही घर में रोना-पीटना पड़ रहा है। झल्लन ने पूछा कि क्या बात है? लोगों ने बताया कि स्याने का 25 वर्षीय युवक पुत्र कल ही चल बसा। यह सुनते ही झल्लन कुछ पूंछे बिना ही वहाँ से अपने घर को लौट आया।

ज्योतिषी के घर में शोक—चार-छह मास के पश्चात् झल्लन की पुत्री का शुभ विवाह होने वाला था। झल्लन ने सोचा—चलो पांधाजी से विवाह का मुहूर्त्त पूछ आवें। यह सोचकर झल्लन पांधाजी के घर पहुँच गया। संयोग ऐसा हुआ कि पांधाजी के घर में भी रोना-धोना मचा हुआ था। झल्लन ने पूछा कि क्या बात है? लोगों ने बताया कि पांधाजी की एक सोलह-वर्षीय पुत्री विधवा हो गई है। उसके विवाह को अभी केवल छः मास ही हुए थे। यह सुनकर झल्लन वहाँ से भी वापस आ गया। उसने पंजाबी में एक दोहा बोला—

वैद्या दे घर पिट्टनाँ, पांध्याँ दे घर रण्ड।
चल झल्लन घर अपने, साहा धरो निःसंग॥

अर्थात् स्यानों के घर में भी शोकाकुल लोग रो-धो रहे हैं और मुहूर्त्त निकालने वालों के अपने घर में पुत्री रांड (विधवा) हो बैठी है। चल रे झल्लन, अपने घर चल और निःशङ्क होकर 'साहा' (विवाह की तिथि) निश्चित कर दे।

उसने सोचा—जब पांधा को अपनी पुत्री के ही विधवा होने का पता नहीं लगा तो मेरे सम्बन्ध में वह क्या बता सकेगा? यह बात ठीक है भाई, इन बातों का किसी को भी

पता नहीं लगता। 'भोज प्रबंध' में लिखा भी है कि, "घोड़े का कूदना, मेघों की गर्जन, स्त्रियों के मन की बात, मनुष्य का भाग्य, वर्षा का न होना अथवा अतिवृष्टि, इन सब बातों को देवजन भी नहीं जान सकते, मनुष्य का तो सामर्थ्य ही क्या है।[1]

सबसे बड़े ज्योतिषी का भ्रम टूटा—काशी-निवासी पं० सुधाकर द्विवेदी काशी के सबसे बड़े ज्योतिषी माने जाते थे। उन्होंने संस्कृत व ज्योतिष के सैकड़ों ग्रन्थों की टीकाएँ लिखी हैं। वह बनारस के राजकीय संस्कृत कॉलेज में ज्योतिष-विभाग के अध्यक्ष थे। उनके घर एक पुत्री ने जन्म लिया। उन्होंने उसकी जन्मकुण्डली बनावाई और उसके जन्म का ठीक-ठीक समय जानकर अपने मित्रों व शिष्यों को भेज दिया। सबने उस कन्या की जन्मकुण्डली बनाकर भेजी और लिखा कि कन्या का सौभाग्य अटल होगा। पण्डित सुधाकर जी को स्वयं भी गणित से ऐसा ही ज्ञात हुआ। परन्तु वह कन्या विवाह के छह मास के पश्चात् ही विधवा हो गई। इस पर पण्डितजी का फलित ज्योतिष पर विश्वास सदा-सदा के लिए डोल गया और उन्होंने काशी के टाउन हॉल में फलित ज्योतिष के खण्डन में व्याख्यान दिया तथा सब ज्योतिषियों को चुनौती दी कि आओ, फलित ज्योतिष पर शास्त्रार्थ करो! परन्तु कोई भी ज्योतिषी उनके सामने न आया। उन्होंने श्री जनार्दन जोशी डिप्टी कलैक्टर को एक पत्र में लिखा है—"मेरा फलित ज्योतिष में विश्वास नहीं है। मैं इसको एक प्रकार का खेल समझता हूँ। ये ज्योतिषी लोग अपने झूठे बकवास से लोगों का धन व्यर्थ में ही लूटते हैं।"

ऋषि दयानन्द के बारे में कहा था—"श्री स्वामी दयानन्द जी महाराज के सम्बन्ध में ज्योतिषी ने उनके पिताजी को बतलाया कि इस बालक के दो विवाह होंगे, परन्तु स्वामी जी तो संन्यासी बन गए और बाल ब्रह्मचारी रहे। स्वामी वेदानन्द जी ने बतलाया कि हम दो व्यक्तियों को जानते हैं जिनका जन्म एक ही ग्राम में, एक ही मुहल्ला व एक ही समय में हुआ। उनका नाम भी एक ही रखा गया, परन्तु एक रलाराम तो पाँच सहस्र रूपय मासिक पाते रहे, मन्त्री भी बने; और दूसरा रलाराम आजीवन साठ रुपये मासिक से अधिक न पा सका। अत: किसी की उन्नति व पतन का आधार जन्म का समय नहीं, प्रत्युत पूर्व-जन्म के कर्म एवं पुरुषार्थ ही हैं।

ज्योतिषी की पुत्री का अपहरण हो गया—गत दिनों समाचारपत्रों में एक घटना प्रकाशित हुई कि एक बहुत बड़े ज्योतिषी की पुत्री का एक स्कूल मास्टर ने अपहरण कर लिया है। चौदह दिन तक उस ज्योतिषी ने किसी को पता तक नहीं दिया। चौदह दिनों तक वह लोगों को यह बतलाता रहा कि लड़की मामा के घर मिलने के लिए गई है।

1. द्रष्टव्य बलाल पण्डित रचित 'भोज प्रबंध', श्लोक-संख्या 142

चौदह दिन के पश्चात् आर्यसमाज के प्रधान को पता चला तो वह दो–चार सज्जनों के साथ लेकर ज्योतिषी के घर पर गए और वास्तविक स्थिति को जानकर कहा, "चलो थानामें चलकर रिपोर्ट तो लिखवाएँ।"

ज्योतिषी जी ने कहा, *अब लड़की तो मेरे काम की रही नहीं, मैं उसको घर पर तो रख नहीं सकता।"

इस पर प्रधान आर्यसमाज ने कहा, "वह आपकी ही पुत्री नहीं, प्रत्युत हमारी भी है। हम उसको अपने पास रखेंगे।"

अन्ततः थाना में रिपोर्ट लिखवाई गई। थाना से पुलिस को साथ लेकर मन्त्री आर्यसमाज कोयटा गया और वहाँ से बहावलपुर राज्य में जाकर लड़की को खोज निकाला। चार–पाँच सहस्र रुपये लगाकर और पाँच मास तक घोर परिश्रम करके उस लड़की का विवाह किया गया। ज्योतिषी जी को जन्मपत्री से इन सब बातों का ज्ञान न हो सका कि लड़की का अपहरण होगा। कहने का तात्पर्य यह है कि ज्योतिषियों को स्वयं अपने बारे में ही विपत्तियों का पता नहीं लग सकता, दूसरों को तो वे क्या बतलावेंगे। इस सम्बन्ध में एक और उदाहरण है–

जाट के घर पर ज्योतिषी–कहते हैं कि एक जाट खेत में गया हुआ था। उसकी धर्मपत्नी घर पर ही थी। ज्योतिषी जी घर पर उसकी स्त्री के पास आया और उसका हाथ देखकर बतलाया कि तुम्हारे ऊपर तो ढाई वर्ष के लिए कठिन समय है। यह सुनकर उस जाटनी के तो होश ही उड़ गए। इतने में ही जाट भी अपने खेत का कार्य निपटाकर घर पर आ गया। जाटनी ने जाट को देखकर कहा कि "देखो, हमारे ऊपर तो ढाई वर्ष के लिए बहुत विपत्ति है। यह पण्डित जी ने बतलाया है।"

जाट ने पण्डित जी से पूछा, "यह विपत्ति किसी प्रकार से टल भी सकती है क्या?"

ज्योतिषी जी ने कहा, "हाँ, गेहूँ वा घृत आदि के दान से विपदा दूर की जा सकती है।"

यह सुनकर जाट ने जाटनी से कहा, "भीतर से एक मन गेहूँ पण्डित जी को लाकर दान कर दो। यह बला तो दूर करनी ही पड़ेगी।"

यह सुनकर जाटनी तो गेहूँ लेने भीतर चली गई। जाट ने भी अन्दर से घर का कुण्डा लगा दिया और एक छोटा–सा दण्डा लेकर ज्योतिषी जी की पिटाई आरम्भ कर दी और सिर से लेकर पाँव तक उसकी खूब पिटाई–कुटाई कर दी। तब ज्योतिषी जी ने करबद्ध विनती करके चौधरी से कहा, "अब की बार मेरी जान छोड़ दो। मैं भविष्य में कभी ऐसा काम नहीं करूँगा।"

इस पर जाट ने कहा कि "पण्डित जी, मैं आपको छोड़ तो दूँगा, परन्तु एक बात

बतलाएँ कि आपको हमारी तो ढाई वर्ष की विपत्ति का पूर्व से ही ज्ञान हो गया, परन्तु आपको अपनी विपदा का ढाई मिनट पहले भी पता नहीं लगा कि अभी कुण्डी बन्द करके आपकी पिटाई होगी!"

जब बिहार में भूकम्प आया—जब बिहार में भूकम्प आया तो सैकड़ों जानें गईं और लाखों रुपये की सम्पदा नष्ट हो गई। कोई भी ज्योतिषी एक मिनट पहले तक नहीं बतला सका कि भूकम्प आएगा। परन्तु जब भूकम्प आ चुका तो एक ज्योतिषी ने समाचारपत्रों में भविष्यवाणी प्रकाशित करवा दी कि 28 फरवरी की रात्रि पुनः वैसा ही भूकम्प आएगा। शरद् ऋतु थी, कड़ाके की सर्दी पड़ रही थी, लोग अपने-अपने बिस्तर उठाए हुए भागे-भागे फिरे। न कुछ आया, न गया।

कोयटा में भगदड़ कैसे—अब देख लो, यह कोयटा का भूकम्प जिसमें पचास सहस्र जन समाप्त हो गए और करोड़ों की सम्पत्ति नष्ट हो गई, परन्तु कोई ज्योतिषी एक मिनट पूर्व तक नहीं बतला सका कि भूकम्प आने वाला है। परन्तु जब आ चुका तो अमृतसर में एक ज्योतिषी ने भविष्यवाणी कि आज रात को तीन बजे वैसा ही भूकम्प आएगा। गर्मियों के दिन थे। लोग मकानों की छतों पर सोए हुए थे। एक गृहस्थी के घर में चूहों ने रसोई के पात्रों में खटखट कर दी। उसको तो पूर्व से भूकम्प का संस्कार था। 'भूकम्प-भूकम्प' कहकर शोर मचा दिया। सारे मुहल्ले में भगदड़ मच गई और देखते-ही-देखते नगर भर में भागा-दौड़ी पड़ गई। न कुछ आया, न गया।

टर्की के भूकम्प के समय—अभी थोड़े दिन हुए टर्की में भूकम्प आया जिसमें तीस सहस्र व्यक्ति मारे गए और करोड़ों की सम्पदा का विनाश हो गया। परन्तु यूरोप का एक भी ज्योतिषी एक मिनट पहले तक नहीं बतला सकता कि भूकम्प आवेगा। परन्तु लाहौर के ज्योतिषियों ने समाचारपत्रों में प्रकाशित करवा दिया कि कश्मीर में भूकम्प आएगा। श्रीनगर के लोग रात को शीत में मैदानों में पड़े रहे। न कुछ आया न गया।

प्रथम विश्वयुद्ध के समय—आज से पचीस वर्ष पूर्व जब कि अंग्रेज़ों का जर्मनी से युद्ध छिड़ा हुआ था, उस समय टर्की जर्मनी के साथ था। मैंने स्वयं उस समय मुसलमानों को यह कहते हुए अपने कानों से सुना था कि हमारी हदीसों में लिखा है कि अमुक तिथि को टर्की का शासक जामा मस्जिद में आकर नमाज पढ़ेगा। और यह हमारेवाले भी भागवत का पोथा बगल में लिये फिरते थे कि बस इतना ही टोपी-राज रहना था. अब इनकी टोपी समाप्त होने वाली है। यदि शासन इन बातों को सुनकर हाथ-पाँव ढीले कर देता तो टर्की का शासक भी जामा मस्जिद में आकर नमाज पढ़ लेता और उनकी टोपी भी समाप्त हो जाती। परन्तु शासक तो जानता था कि ये सब अंधविश्वास की बातें हैं। ये बातें कभी व्यवहार में आने वाली नहीं हैं। सरकार पूर्ववत् अपने पुरुषार्थ में लगी

रही। परिणाम यह निकला कि उनकी हदीसें धरी-धराई रह गईं और इनका भागवत का पोथा धरा-धराया रह गया। अंग्रेज़ी राज्य पूर्ववत् भारत में दनदनाता रहा।

सेठों को दीवालिया कर दिया—इन ज्योतिषियों ने सैकड़ों सेठों का तो दीवाला ही निकलवा दिया। जब ये ज्योतिषी लोग बाज़ार में जाते तो दुकानदार लोग इनके पीछे, लग जाते—'महाराज! गेहूँ का भाव घटेगा या चढ़ेगा? सोना मन्दा होगा अथवा तेज़?' दस को मन्दा बता देंगे और दस को कहेंगे—भाव चढ़ेंगे। कोई मरे कोई जिये, सुथरा घोल बताशे पिये।' यदि भाव चढ़े तो दस मँहगे वालों को लूट लिया, यदि सस्ता हो गया तो दस मन्देवालों को लूट लिया। इस ठग्गी का संसार में कहीं भी अन्त नहीं है।

कोई कुशल व्यापारी कहे तो—यदि कोई व्यापार में सुदक्ष व्यक्ति किसी वस्तु की उपज व खपत का अनुमान लगाकर कोई बात बतलावे, तो सम्भव है कि उसका कथन कुछ सीमा तक सत्य सिद्ध हो, परन्तु जिन लोगों का व्यापार से दूर का भी सम्बन्ध नहीं है, उन लोगों से व्यापार के सम्बन्ध में परामर्श लेना स्वयं को डुबोने वाली बात नहीं तो क्या है? यदि इन लोगों को मन्दे व तेजी का पता लग जाता तो ये लोग स्वयं ही सौदे करके करोड़पति क्यों न बन जाते? परन्तु ये तो दूसरों को ही करोड़पति बनाते फिरते हैं। स्वयं तो दो-दो पैसे के लिए लोगों की दुकानों के चक्कर काटते हुए जूते घिसते रहते हैं।

लायलपुर में बाबू बर्बाद हो गए—महाशय केसरचन्द जी भजनोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा ने बताया कि लायलपुर में एक ज्योतिषी ने भविष्यवाणी की कि यह तोरिया जिसका तेल निकलता है, यह नौ रुपये मन हो जावेगा। उस समय तोरिया का भाव साढ़े चार रुपये मन था। बाबू लोगों ने जो सर्विस में थे, बैंकों व डाकघरों से अपनी-अपनी पूँजी निकलवाकर यथाशक्ति सहस्रों रुपये का तोरिया खरीद लिया। परन्तु तोरिया का भाव गिरकर ढाई रुपये मन हो गया। सर्विस करनेवाले अनेक बाबू इस धंधे में बर्बाद हो गए। इनमें से कुछ एक मिलकर ज्योतिषी जी के पास गए और पूछा कि आपके ज्योतिष को क्या हुआ? वह बड़ी सरलता से बोले, "मेरी गणना में एक बिन्दु का अंतर रह गया जो मुझे दिखाई न दिया।" अब ज्योतिषी को तो केवल एक बिन्दु का पता न चला, परन्तु उसकी भूल से लोगों के सहस्रों डूब गए।

ज्योतिषी कैसे ठगते हैं—एक ज्योतिषी गलियों में जाता है तो ये हमारी माताएँ झट उसके आगे हाथ कर देती हैं कि देखना बाबा, मेरे क्या होगा? अब यदि बाब कहे कि तुम्हारे कुछ नहीं होगा तो बाबे को क्या मिले? बाबा कहता है कि "माई जी, लड़का होगा लड़का!" माई बहुत प्रसन्न होती है और कुछ-न-कुछ राशि नौ मास पूर्व ही अग्रिम दे देती है। फिर वह पड़ोसन के पास जाकर कहता है कि "होगी तो उसके यहाँ कन्या,

परन्तु मैंने उसका मन प्रसन्न करने के लिए पुत्र कह दिया है।" इतना कहकर ज्योतिषी जी तो चलते बने। अब आए एक वर्ष के पश्चात्। आप जानते ही हैं कि कोई ऊँट-घोड़ा तो होने से रहा! या लड़का होगा या लड़की होगी! यदि लड़का हुआ तो उसके पास पहुँचे कि देखा, हमने कहा था कि पुत्र का जन्म होगा! अब लाओ कुछ भेंट-पूजा! यदि कन्या का जन्म हुआ तो उसके पास न जाकर पड़ोसन के पास पहुँचे कि हमने कहा था कि उसके कन्या होगी, हमने उसका मन प्रसन्न करने के लिए लड़का कह दिया था। अब लाओ कुछ भेंट-पूजा! यदि पुत्र हुआ तो उसको लूटा, यदि लड़की हुई तो दूसरे को लूटा।! इस ठग्गी का जगत् में कोई अन्त ही नहीं।

माँ-बेटा दोनों ज्योतिषी—जिन दिनों हम स्कूलों में पढ़ा करते थे, उन दिनों हमने एक चुटकुला पढ़ा था। एक बालक ने कहा कि मैं बड़ा ज्योतिषी हूँ और मेरी माँ मेरे से भी बढ़कर ज्योतिषन है। लोगों ने पूछा कैसे? उसने कहा जब मेघ आते हैं तो मैं कहता हूँ वर्षा होगी, और मेरी माँ कहती है कि नहीं वर्षेंगे। तो या तो वह होता है जो मैं कहता हूँ, या वो होता है जो मेरी माँ कहती है।

इस प्रकार का ज्योतिषी तो प्रत्येक व्यक्ति बन सकता है। ये हाथ में जो रेखाएँ होती हैं, ये तो हाथों में जोड़ों के निशान हैं। जो लोग हाथों से श्रम करते हैं उनके हाथों पर ये रेखाएँ कम होती हैं, और जो लोग हाथों से थोड़ा काम करते हैं उनके हाथों में रेखाएँ अधिक होती हैं। इन हाथों में कहीं पर भी धन, सम्पदा, आयु, सन्तान, विवाह आदि लिखा हुआ नहीं होता।

हाथ में क्या लिखा है?—कहते हैं कि एक आर्योपदेशक एक ग्राम में प्रचार करने के लिए गया। जब वह एक सज्जन के घर भोजन करने गया तो एक माता ने उसके आगे अपना हाथ करते हुए कहा, "देखना पण्डित जी! मेरे हाथ में क्या है?" पण्डित जी ने सहज रीति से कहा, "माताजी! तुम्हारे हाथ में मुझको तो हड्डियाँ, लहू व चर्म दिखाई दे रहा है।" माता ने कहा कि "पण्डित जी! मैं यह बात नहीं पूछा रही। मैं तो यह पूछ रही हूँ कि मेरे इस हाथ में पुत्र कितने लिखे हैं और पुत्रियाँ कितनी लिखी हैं? इनमें से कितनों का जीवन लिखा है और कितनों का मरण लिखा है?— इस पर पण्डित जी ने उत्तर दिया, "माताजी! यह हाथ है, नगरपालिका का कार्यालय नहीं है।"

मौत का समय बताकर—ये ज्योतिषी लोग कितने ही व्यक्तियों की मृत्यु के बारे में भविष्यवाणी करके उनको झंझट में फँसा देते हैं और बहुत-से लोग तो ज्योतिषियों की बातों पर विश्वास करके स्वयं जनता के उपहास का कारण बन जाते हैं। उदाहरण के लिए अभी 'दैनिक प्रताप' लाहौर के 25 अप्रैल सन् 1940 के पृष्ठ 18 पर कालम तीन में एक रोचक समाचार छपा है—

"ज्योतिष में अंधविश्वास की सीमा तक आस्था ने एक व्यक्ति को किस प्रकार समय से पूर्व मृत्यु-शय्या पर लिटा दिया, इस प्रकार की घटना अभी इन दिनों शेखूपुरा में घटी है। लाला दीवानचन्द मल्होत्रा, जो रिटायर्ड सरकारी अधिकारी हैं और रावलपिण्डी के हैल्थ आफीसर डॉ० हरबंसलाल के पिता हैं, ज्योतिष में बहुत विश्वास रखते हैं। उनकी आयु इस समय लगभग साठ वर्ष है। एक ज्योतिषी ने लालाजी को बताया कि वह अमुक दिन अमुक समय स्वर्गवासी हो जाएँगे। इस पर लालाजी ने अपने सब प्रेमियों, मित्रों व सम्बन्धियों को सूचित कर दिया। दान-पुण्य जो करना था, करके, मृत्यु की बाट देखने लगे। चारपाई छोड़कर धरती पर लेट गए। आप एक सप्ताह तक मृत्यु की प्रतीक्षा में रहे। चिन्ता से भार घटकर आधा रह गया। ज्योतिषी द्वारा बताई गई मौत की घड़ी निकल गई। मौत नहीं आई, नहीं आई। लालाजी ने अपने सब मित्रों सगे-सम्बन्धियों को क्षमा-याचना व धन्यवाद के पश्चात् लौट जाने को कहा। यह घटना सारे नगर की रुचि व मनोरंजन का विषय बनी हुई है।"

वह हरिद्वार मरने गया—एक सज्जन की ज्योतिषी ने जन्मपत्री बनाई और उसमें लालाजी की आयु 47 वर्ष की लिखी थी। जब लालाजी की आयु 46 वर्ष बीत गई तो 47वें वर्ष आप अपनी आयु समाप्त करने के लिए हरिद्वार जा रहे थे तो मार्ग में पं० जनार्दन जोशीजी डिप्टी कलैक्टर अल्मोड़ा भी उसी डिब्बे में सवार हुए। लालाजी से वार्तालाप होने पर उनका प्रयोजन सुनकर पण्डित जी बहुत हँसे और उन्हें समझाने लगे कि "परमात्मा के सिवा यह किसी को भी पता नहीं कि किसकी कितनी आयु है। फलित ज्योतिष केवल लोगों को ठगने का बहाना है। मैं भी ज्योतिष जानता हूँ और मुझे इस पर कतई विश्वास नहीं है।" पण्डित जी की बात लाला जी की समझ में आ गई और वह हरिद्वार से स्नान करके गुरदासपुर लौट आए। अब उनकी आयु 63 वर्ष है और स्वस्थ-नीरोग जीते-जागते विच रहे हैं।

और वह न मरे—पं० नन्दलाल जी चौधरी बटाला आर्यसमाज में रहते हैं। उनकी जन्मपत्री ज्योतिषी ने बनाई और आयु 70 वर्ष लिखी है। इस समय पण्डित जी की आयु 80 वर्ष है और वह जीते-जागते स्वस्थ दिन बिता रहे हैं। यह बात उन्होंने स्वयं मुझे बताई।

एक महात्मा मरने बैठे तो—रावलपिण्डी में एक चरायतेवाले सिख महात्मा प्रसिद्ध हैं जो कि सब तीर्थों को चरायते का जल पिलाते हैं। गत दिनों तक ज्योतिषी ने उन्हें बतलाया कि आपका निधन आज से साठ दिन के पश्चात् हो जाएगा। महात्मा जी इस बात को सुनकर गुरुद्वारे में बैठ गए और अपनी मृत्यु का विज्ञापन देकर घोषणा कर दी। स्त्रियाँ, पुरुष व बालक सब दर्शनार्थ आने लगे। पर्याप्त भेंट-पुजापा चढ़ने लगा। सहस्रों रुपये चढ़ावा पाकर बाबाजी ने एक सौ रुपये बाजेवालों को, पचास रुपए मोटरवालों को

और पचास रुपये फूलोंवालों को दिए और कहा कि मृत्यु के पश्चात् मेरी शव-यात्रा निकालकर पंजा साहेब होते हुए मुझे अटक नदी में प्रवाहित कर देना। जब पंद्रह दिन शेष रह गए तो पुलिस को भी पता लगा और उसने महात्मा जी पर पहरा लगा दिया और एक डॉक्टर भी विधिवत् आकर बैठ गया। जब नियत समय समाप्त होने में दो घण्टे शेष रह गए तो एक मोटर को फूलों से सजाकर उसमें महात्मा जी को बिठाया गया और बाजा बजने लगा। निश्चित समय पर महात्मा जी ने मरने वालों के समान धुड़धुड़ियाँ भी लीं। परन्तु जब नियत समय पर वह न मरे, तो लोगों ने महात्मा जी पर ईट-पत्थर की वर्षा आरम्भ कर दी और उच्च स्वरों में कहा, "अब आप मरते क्यों नहीं? लोगों का इतना रुपया ठग लिया।" पुलिस ने बहुत कठिनाई से लोगों से महात्मा जी की जान बचाई। मोटर को दौड़ाकर थाना में ले गए। जब पुलिस ने वास्तविकता की जाँच-पड़ताल की तो महात्मा जी ने बलाया कि मुझे तो यह बात ज्योतिषी ने बतलाई थी। इस घटना ने एक मास तक लोगों को आश्चर्य में डाले रखा।

लतालेवाले महात्मा बिशनदास—श्री पं० बिशनदास जी लतालेवालों को ज्योतिषयों ने बतलाया था कि आपकी आयु 69 वर्ष है, परन्तु आप 47 वर्ष की आयु में परलोक सिधारे।

लाला सालिगराम जी जाखल मण्डी हरियाणा को पं० नन्दकिशोर मेरठ के भृगुसंहितावाले ज्योतिषी जी ने यह बतलाया था कि तुम विक्रम सम्वत् 1982 में स्वर्गवासी हो जाओगे। परन्तु वह आज-पर्यन्त (सम्वत् 1997 में भी) ठीक-ठाक जीवित हैं।

भृगुसंहितावालों की गप्प—महाशय हंसराज जी आर्य, मन्त्री आर्यसमाज जाखल को इन्हीं पं० नन्दकिशोर जी भृगुसंहितावालों के सुपुत्र ने सुनाम के निकट गुजराँ ग्राम में बतलाया था कि तुम्हारे तीन पुत्र होंगे और तीनों जीवित रहेंगे। परन्तु अब तक दो पुत्रों का जन्म हुआ है और दोनों ही मर गए हैं, वे भी ज्योतिषी जी के बतलाने से पहले ही। यह बात ग्यारह वर्ष पूर्व गुजराँ में ज्योतिषी जी ने महाशय जी को भी बताई थी।

ज्योतिषी का पुत्र गुरु—पिण्ड दादन खाँ के ज्योतिषी पं० अमरचन्द का पुत्र पाँच वर्ष से गुम है, परन्तु वह अब तक अपने पुत्र का पता नहीं लगा सके।

जन्म का समय व भोग—ये ज्योतिषी लोग जो जन्मपत्री बनाते हैं, यह उस समय को ध्यान में रखकर बनाई जाती है कि जिस समय में किसी मनुष्य का जन्म होता है, और लोगों को आगे चलकर जो दु:ख व सुख प्राप्त होने हैं, वे बतलाते हैं। वे प्रत्येक व्यक्ति के नाम के प्रथम अक्षर के अनुसार उसके वर्ग व राशि को निकालकर उस राशि का सुख व दु:ख बतलाते हैं।

एक क्षण में अनेक का जन्म—अब यह बात विचारणीय है कि संसार में जिस

क्षण एक राजा के घर पुत्र का जन्म होता है, उसी क्षण एक रंक के घर भी एक बालक का जन्म होता है। भाव यह है कि उसी एक क्षण में इस सृष्टि में अनेक जीवन विभिन्न योनियों में जन्म लेते हैं। यदि जन्म का समय ही किसी जीव के सुखी-दु:खी होने का कारण है तो ऐसे सब बच्चों का भाग्य एक समान होना चाहिए, परन्तु संसार में हमें ऐसा दिखाई नहीं देता।

राशि से भोग का शुद्ध भ्रम—यदि संसार में किसी के नांम के प्रथम अक्षर से ही उसके भविष्य के सुख-दु:ख का पता चल सकता है तो क्या जिन मनुष्यों के नाम के प्रथम अक्षर एक-से हैं, उनके सुख-दु:ख आदि भोग क्या एक समान होते हैं? कदापि नहीं, कदापि नहीं।

गोसेवक बाबू हासानन्द वर्मा

—हासानन्दात्मज गोविन्दराम आर्य

अक्तूबर 1966 (संवत 2023) के 'वेद प्रकाश' के अंक में प्रकाशित यह लेख श्री सत्येन्द्र सिंह जी आर्य, मेरठ के सौजन्य से मुझे प्राप्त हुआ है। गोसेवा विषयक श्री हासानन्द जी की भावना एवं उनके द्वारा किया गया कार्य अत्यधिक प्रशंसा के योग्य है। कलकत्ता, मुम्बई व मथुरा में उन्होंने गोरक्षा आन्दोलन खड़े किये व समाज को जाग्रत करने का महत्वपूर्ण कार्य किया। आज इस कार्य की बहुत बड़ी आवश्यकता है, क्योंकि कत्लखाने दिन-प्रतिदिन बढ़ते ही जा रहे हैं और सरकार के समक्ष यह मुद्दा आवश्यक नहीं है।

—अजय कुमार

श्री हासानन्द वर्मा का जन्म संवत 1923 में हुआ था। श्री गोविन्दराम जी का यह लेख मैंने सन् 1955 से सम्भाल कर रखा हुआ था कि श्री हासानन्द वर्मा के 100वें जन्म वर्ष पर इसे प्रकाशित करूँगा सो पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत है जो हासानन्द वर्मा का जीवनवृत्त उन्हीं के पुत्र श्री गोविन्दराम जी द्वारा —विजय कुमार

इस बीसवीं शताब्दी में दीर्घकाल तक गौरक्षा आन्दोलन तथा गो सेवा का कार्य जितनी लगन और त्याग से श्री बाबू हासानन्द वर्मा ने किया शायद ही किसी ने की हो। इनका जन्म सिन्ध प्रान्त के शिकारपुर नामक प्रसिद्ध व्यापारी नगर में संवत् 1923 विक्रमी में एक साधारण वल्लभाचार्य मतावलम्बी वैष्णव कुल में हुआ था। इनके पिता श्री तुलसीदासजी का व्यापारिक दुकानदारी का काम अपने भाइयों के साथ क्वेटा बलोचिस्थान की तरफ था, तुलसीदास धार्मिक भावनाओं के और गोसेवक थे। घर में गो थी उसकी सेवा वे स्वयं

लगन के साथ किया करते थे। अपने जीवन के अन्तिम दिन उन्होंने बलोचिस्थान के मुस्लिम प्रदेश को छोड़कर श्रीनाथ द्वारा में आकर बिताये।

दुकानों का बटवारा स्वयं अपने भाइयों में कर गये। अपने पुत्र हासानन्द के लिए उस मुस्लिम प्रदेश में कुछ जमीन तथा मुस्लिम सौदागरों में उधार बाकी रुपये दे गये। अस्तु,

श्री हासानन्द जी अपने पिता के एक मात्र पुत्र थे, माता तथा अपने परिवार का बोझ इन पर ही आ पड़ा, चाचा, ताऊओं से अलग सामान्य दुकानदारी में लगे रहे, हिम्मत पुरुषार्थ के साथ।

मेरी माताजी का देहान्त मेरे जन्म के एक मास पश्चात् ही हो गया था। पिताजी ने यद्यपि दूसरा विवाह कर लिया था फिर भी मेरा लालन पालन मेरी दादी के ही वात्सल्यप्रेमी हाथों में हुआ।

5-6 वर्ष की आयु में पिताजी के साथ बलोचिस्थान क्वेटा के पास किसी छोटे ग्राम में उनकी दुकान थी। उस ग्राम में केवल 150-200 घर ही होंगे जो कि सभी मुसलमान थे। उस समय मुसलमानों में हिन्दुओं के साथ प्रेम था, वैमनस्यता का नाम भी न था। उस ग्राम में हमारी एक मात्र दुकान थी जो कि बनिये की दुकान के नाम से प्रसिद्ध थी, इसके अतिरिक्त अंग्रेजी हुकूमत का एक नुमाइन्दा हिन्दू सपरिवार रहता था जो कि पंजाब प्रान्त का निवासी था। हिन्दु होने के नाते हम तथा वे परस्पर एक दूसरे के यहाँ आते जाते थे। बलूची पठानों का हिन्दूओं से सौहार्द्र का सा व्यवहार था। हम जिस मकान में रहते थे उसके एक हिस्से में दुकान थी, दूसरे हिस्से में रहने का घर। एक रात को कोई चोर आया। मकान की दीवार में सेंध लगाकर ज्योंही घुसा तराजु और बाटों पर उसका पांव पड़ा आवाज हुई, पिताजी पास वाले कमरे में थे जाग पड़े ज्यों ही दियासलाई जलाकर रोशनी की चोर पीछे फाँदकर भाग निकला। छत पर से पिताजी ने देखा, चोर घोड़े पर चढ़ा भागा जा रहा था, अन्य किसी गाँव से आया था। प्रातः होते ही सारे गांव में बिजली की तरह बात फैल गई कि 'बनिये के घर चोर आया' लोग हमारे यहाँ समवेदना दिखाने आने लगे, मकान का मालिक जमीदार भी आया वह दीवार को सेंध लगा देख दाँत पीसने लगा कि हमारे गांव में कौन चोर आया। उसका पता लगाने घोड़े पर सवार हो चोर की खोज में निकल पड़ा। पिताजी ने बहुत रोका कि हमारी कोई चोरी नहीं हुई आप कष्ट न करें, किन्तु वह चला ही गया। बहुत देर बीते वापस आया, चोर का पता नहीं लगा जहाँ तक घोड़े के पाँव के निशान मिले वहाँ तक वे होकर वापस आने पर मजबूर थे। बहुत दूर एक नदी पड़ती थी उसके दूसरी तरफ घना जंगल होने से कोई निशान न पाकर ही वापस लौटना पड़ा। अड़ोस-पड़ोस के मुसलमानों से भी बहुत प्रेम था। प्रातः होते ही अपने बच्चों के साथ मुझे भी ले जाते थे। 10-11 बजे तक प्रातराश वहीं खेतों में ताजे फल, अंगूर,

शहतूत, सरदे आदि से होता। खुली हवा, ताजे फलों ने मेरे शरीर पर प्रभाव डाला। मैं आवश्यकता से अधिक मोटा हो चला। कुछ मास बाद न जाने क्यों खाँसी का भी रोग मुझे लग गया, पिताजी मुझे लेकर सिन्ध चले आये और मुझे मेरी दादीजी के पास छोड़ गये। इसके पश्चात् उनका भी मन वहाँ नहीं लगा होगा, दुकान का काम समाप्त कर सिन्ध चले आये। कुछ समय बाद मेरी दादी का देहान्त हो गया इस कारण मुझे मेरे ननिहाल छोड़ बम्बई चले गये वहाँ सोने चाँदी की दलाली का कार्य करने लगे, वर्ष डेढ़ वर्ष बाद सिन्ध आकर मेरी विमाता मेरी छोटी बहन तथा मुझे लेकर बम्बई आये। उन दिनों भी कराची के अलावा मारवाड़ के रास्ते बम्बई जाना पड़ता था। 1956 का दुर्भिक्ष का समय था। मारवाड़ पर उसका विशेष प्रभाव पड़ा था। शायद इसी कारण, अजमेर, जयपुर आदि भी होकर बम्बई गये।

बम्बई में उन दिनों काँग्रेस का अधिवेशन था बम्बई पहुँचकर काँग्रेस प्रेसीडेन्ट तथा सेक्रेटरी के नाम एक प्रार्थनापत्र गुजराती लिपि में छपवाकर भिजवाया जिसमें मारवाड़ के दुर्भिक्ष से गो आदि पशुओं पर जो विपत्ति थी तथा गरीब अनाथ बच्चों को ईसाई मुसलमान अपनी शरण में ले जाकर विधर्मी बनाते थे, इस ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता पर जोर दिया गया था। अजमेर में दयानन्द अनाथालय के अवलोकन से ही अनाथों की ओर और उसी समय ऋषि दयानन्दकृत 'गो करुणा निधि' पुस्तक वहाँ मिली थी, उसके अवलोकन से भी गोरक्षा की ओर ध्यान दिया गया था।

ज्ञात नहीं काँग्रेस को दिये गये प्रार्थनापत्र का काँग्रेसी नरम दली नेताओं पर क्या प्रभाव पड़ा उस समय काँग्रेस नरम दली नेताओं के हाथ में था।

बम्बई में सोने चाँदी की दलाली करते हुए इस्वी सन् 1898-99 में एक समय ऐसा आया कि सोने चाँदी के भावों में खूब उथल पुथल (कमी-बेशी) होती रही शायद इसका कारण अफ्रीका का बोर युद्ध था। उस उथल-पुथल में पिता श्री हासानन्द जी भी फंस गये। कुछ सट्टा किया होगा, घाटे के कारण बम्बई छोड़ कलकत्ता चले आये उस समय मेरी आयु 13-14 वर्ष की थी। कलकत्ते में बैंको में देशीविलायती हुण्डी की दलाली का कार्य आरम्भ किया। यह बात सन् 1899 या 1900 की है। लार्ड कर्जन का समय था। उन दिनों बम्बई की तरह कलकत्ते में भी प्लेग की महामारी हर साल फैलती रही। प्लेग के दिनों में, कलकत्ते के निकट लिलूआ तथा बाली नगरों में जाकर 2-3 मास बिताया करते थे। सन् 1903 की बात है, एक दिन प्रातःकाल 4 बजे उठकर भ्रमण को निकल गये लिलूआ और हावड़ा के बीच सलकिया नामक गांव पड़ता है उसके रास्ते पर गायों का झुण्ड जा रहा था। पूछने पर पता लगा कि कसाईखाने जा रही हैं। ले जाने वाले कसाई से बातचीत हुई। उससे उस झुँड की सब गौयें खरीद कर कलकत्ते ले आये।

हरिसनरोड पर सिक्खों के गुरुद्वारे के सामने एक मैदान पड़ा था (जहाँ पर अब भोलानाथ का कटरा नामक कोठी है) बन्धवा दी। कसाइयों को दाम चुकाने की चेष्टा में लगे, घर में धर्मादा पिंजरापोल का डब्बा था उसमें पिताजी अपनी कमाई में से कुछ हिस्सा नित्य डाला करते थे उसमें से लगभग 80 रुपये निकले बाकी धनी लोगों से माँग कर कसाईयों को पैसे दे दिये, गायों को पिंजरापोल भेज दिया। बस उसी दिन से गौओं की रक्षार्थ अपना कामकाज छोड़कर फकीराना वेश धारण कर लिया।

कलकत्ते के गौआ बागान नामक स्थान में ग्वालों के घर देखे जहाँ रोहतक, हिस्सार प्रान्त की सुन्दर गायों को देख, छोटे-छोटे बछड़े दो-दो तीन-तीन रुपयों में खरीद कर लाये, बड़ा बाजार के धनी मारवाड़ी सेठों को दिखाया कि देखो बछड़े कसाई ले जाकर वध करते हैं इसके बाद गायों का दूध बन्द हो जाने पर कसाई उसे ले जाते हैं, लगातार आन्दोलन करते रहे। समय-समय पर कसाइयों से गौए और बछड़े लेकर पिंजरापोल भिजवा देते थे। गौरक्षार्थ भारत सरकार को प्रार्थना पत्र भेजने का विचार किया, तैयार कराया, हस्ताक्षरों के लिए सारे भारत में वितरित किया, लोगों में जागृति पैदा हुई, आर्य समाज के नेता महात्मा मुँशीराम जी (स्वामी श्रद्धानन्दजी) ने अपने 'सद्धर्म प्रचारक' पत्र के कई पृष्ठ गौरक्षार्थ हस्ताक्षरों के लिए प्रसारित किये। लाखों हस्ताक्षर यथासमय कलकत्ते पहुँच गये, भारत के गवर्नर महोदय को गौरक्षा प्रार्थना पत्र हस्ताक्षरों सहित भेज दिया गया।

विदेशी सरकार से जो कुछ आशा थी वही हुआ। दो शब्दों में उत्तर आया कि अंग्रेज सरकार किसी के धर्म में हस्तक्षेप नहीं कर सकती।'

बहुत सोचा गौरक्षा कैसे हो, अन्त में एक नतीजे पर पहुँचे कि दूध के व्यवसायी ग्वालों को कलकत्ते के निकट शहर के बहार बसाया जावे। वहाँ उन्हें गौओं के रहने की, चरने की जमीन दी जावे तो गौरक्षा सुगम होगी क्योंकि दूध सूख जाने पर गौएँ जंगल में चरेंगी, पुनः गाभन होकर दूध देने लगेंगी, ग्वालों को भी लाभ होगा और गौरक्षा भी होगी। इसी बात का आन्दोलन करके कलकत्ते के पास लिलूआ नामक ग्राम में दूध वाली गायों के लिए स्थान बनाया काँचरापाड़ा नामक स्थान में बड़ा जंगल करीब एक हजार बीघा हरियाली से हराभरा खरीदा, जहाँ नदी किनारे होने के कारण बारहों मास घास मिलता था। बहुत प्रयत्न करने पर दूध के व्यवसायी बंगाली ग्वालों में से एक या दो ग्वाले ही अपनी गौवें लेकर लिलूआ गये और नहीं आये। एक स्थान पर वर्षों से बसे सहज में नहीं हिलते, उसे तो कानून ही हिला सकता है, इसके लिए कलकत्ता कारपोरेशन के अधिकारियों तथा बंगाल गवर्नमेंट में प्रयत्न किया। सब तरफ से निराशा ही निराशा हुई। इसके बाद फिर सोचा कि अब क्या किया जाय। 'गौकृषिवाणिज्यं वैश्यकर्म स्वभावजम्' शास्त्र वचनानुसार धनीमानी व्यवसायी वैश्यो को प्रेरणा करने लगे कि कलकत्ते के ग्वाले तुम्हें गौ दूध के

साथ गौरक्त मिश्रित दूध पिला रहे हैं। जन्मजात बछड़ों को कसाइयों के हाथ बेच देने पर गौर को फूंका देकर जो दूध दूहा जाता है वह गौरक्त मिश्रित होता है फूंका प्रथा बड़ी दर्दनाक प्रथा है जो अब भी चालू है, गौ की योनि मार्ग से बाँस की फूँकनी से नमक आदि क्षार पदार्थ फूँका जाता है। वह क्षार गाय के दुग्ध स्थान में पहुँचता हैं। वहाँ क्षार पहुँचते ही गाय थर-थर काँपती है और जो कुछ दूग्ध होता है उसे छोड़ देती है। साथ में रक्त का भी अंश उस दूध में आता है। अस्तु यह बातें आज से 50 वर्ष पूर्व ही पिताजी ने प्रकाशित की थीं, इसका वर्णन महात्मा गाँधीजी की आत्मकथा में भी बीजरूप से अंकित है, महामना मालवीय के अभिनन्दन ग्रन्थों में भी आया है।

कलकत्ते के ग्वालों के कृत्यों का भण्डा फोड़ एक तरफ पत्रों, पुस्तिकाओं और व्याख्यानों द्वारा करते रहे दूसरी तरफ रचनात्मक कार्य के लिए 'श्री कृष्ण गौशाला।' स्थापित की थी जिसके सर्व सभापति स्वनाम धन्य श्रीयुत शारदाचरण मित्र न्यायाधीश हाईकोर्ट कलकत्ता रहे।

सनातन धर्म के प्रमुख नेता स्व० महामना मदनमोहन मालवीयजी, व्याख्यान वाचस्पति स्व० श्री पंडित दीनदयालुजी शर्मा आदि गौरक्षा के कार्य में सहायक रहे। श्री पण्डित मदनमोहन मालवीयजी के प्रेरणा से कलकत्ते के मारवाड़ी धनाढ्यों में से अनेक धनी मानी सज्जनों ने 'गोरस कम्पनी' स्थापित की, करीब 2 लाख के शेयर (हिस्से) भी लेने की लोगों ने प्रतिज्ञा की। श्री भक्त एण्ड कम्पनी लिमिटेड मैनेजिंग डायरेक्टर नियुक्त हुए, 500 रुपये महावारी पर एक अंग्रेज को भी नियुक्त किया, खेद है कि 5-6 मास के पश्चात् न मालूम क्यों कम्पनी तोड़ दी गई। हिस्सेदारों को रुपये लौटा दिये गये।

इससे पिताजी को अपार दुःख व निराशा हुई 8-10 लाख की गोपालनार्थ जमीन उस पर बनाये घर तथा गोचर भूमि पर लगे दानियों के धन वैसे ही बेकार जावेंगे, यह सोचकर निश्चय किया कि यह कार्य भी मुझे ही करना पड़ेगा।

अन्त में गोपालन का कष्ट साध्य व्यवसाय का भी आरम्भ किया। अपनी दुग्धशाला खोली, मुसलमान सौदागरों से जो हरियाना, हिसार प्रान्त से गौयें लाते थे खरीदनी आरम्भ की, दूध की बिक्री का प्रबन्ध के लिए शहर के पृथक् 2 स्थानों पर 2-3 अड्डे बनाये, जिन दिनों में कलकत्ते में आठ आने सेर दूध मिलता था पिताजी ने लोगों को घर बैठे चार आने सेर दूध देने की घोषणा की। वह इस शर्त पर कि एक सेर दूध लेने वालों को 25 रुपया प्रतिसेर डिपाजिट अग्रिम जमा करना होगा। लोगों ने धड़ाधड़ रुपये जमा करना आरम्भ किया, वह रुपये गौ के सौदागरों के काम में लगते गये, गायों की संख्या दिन-दिन बढ़ती गई, अल्प दिनों में ही 2-3 सौ गौओं की संख्या हो गई। दूध वाली गौओं के लिये लिलूआ स्थान रहा, बिना दूध की गौओं को काँचड़ापाड़ा की गोचर भूमि में भेज देते रहे।

वहाँ पहले से ही अच्छा प्रबन्ध था। काँचड़ापाड़ा की गोशाला में एक सुन्दर जलकूप (कुँआ) कलकत्ते के एक पारसी सज्जन जे० एफ० माडनजी ने बनवा दिया था।

काँचड़ापाड़े मुसलमान जमीदारों की गौभक्ति की एक कहानी सुनने लायक है। गौशाला में जब कभी गाय मर जाती थी तो पिताजी उसे जंगल में फिंकवा देते थे। इस पर वहाँ के एक मुसलमान जमींदार ने आकर कहा कि बाबा! आप यह क्या करते हैं। पिताजी ने जब जिज्ञासा की कि आप मरी हुई गाय क्या करते हैं, इसके उत्तर में उसने कहा कि हम लोग तो घर में मरी हुई गाय को दफनाते हैं जैसे हम अपने परिवार के व्यक्ति को। यह बात आज से 50 वर्ष पूर्व की है, गौभक्षक मुसलमानों की अब वह परिस्थिति नहीं रही, कारण जितना ही हिन्दू-मुस्लिम एकता का प्रयत्न किया गया उतना ही अंग्रेज और मुस्लिम लीग के कारण वैमनस्य, उत्तेजना तथा द्वेष बढ़ाता गया।

दूध लेने वालों की डिपाजिट खत्म होने को आई उनके बिल बनाने आदि का कार्य आरम्भ हुआ, दूसरे रुपये आवें तब गौओं के खाने, पीने, नौकरों के वेतन देने तथा सौदागरों के तकाजों में दिये जावें। गौओं के प्रति जितनी भावना पिताजी में थी उतनी व्यवसाय बुद्धि नहीं थी, 25 रुपये एक सेर दूध देनेवाली गौओं का मूल्य सौदागरों को देना पड़ता था, उसके बाद कुछ हाथ में भी रखना आवश्यक था वह नहीं रखा गया इस कारण दूसरे रुपये आवें तब काम चले। पिताजी ने मुझे सहायोग देने के लिये बुलाया। मैं अपना चीनी की दलाली का कार्य छोड़, गौसेवार्थ चला गया। देख दूध के ग्राहकों के बिल बनाने उसके रुपये आने में बिलम्ब होगा, तब तक सौदागर तथा गौसेवक ग्वाले वावेला मचावेंगे, उनको सम्भालना कठिन है दीपावली का समय था, मैंने अपने मित्र तथा गौरक्षा आन्दोलन में सहायक मित्रों को इकट्ठाकर गौरक्षार्थ स्पेशल चन्दा इकट्ठा किया जो कि दीवाली के 5-7 दिनों के प्रयत्न से ही 8-10 हजार रुपये हो गये। वे रुपये समय पर पिताजी के काम आये, सौदागरों तथा नौकरों को देकर शान्त किया गया। इसके बाद फिर सौदागर लोग गौएं पिताजी को उधार देने लगे। उधार में एक का ड्योढ़ा मूल्य लगाते रहे, पिताजी भावुकता में आकर लेते ही गये। मुझे तथा मेरे सहायक मित्रों को यह पसन्द न आया। हम अलग हुए, कुछ मास बाद पिताजी फिर घबराये। अन्त में इस कार्य में भी उन्हें निराशा ने आघेरा। सौदागरों का तथा नौकरों को वेतन देने की चिन्ता, गौओं को भी पूरा भर पेट चारा दाना न मिलने से घबराहट में आ गये। अन्त में मुझे बुलाया और कहा कि इस कार्य को यदि तुम्हारी आर्यसमाज सम्भाले तो मैं अपनी 'श्रीकृष्ण गौशाला' की तमाम जमीन व सम्पत्ति उनके नाम कर दूं, मैंने समाज के अधिकारियों से बातचीत की तथा सामयिक प्रधान श्री भोलानाथजी आर्य कोल मर्चेन्ट को लेजाकर लिलुआ की जमीन व गौशालादि दिखाई, उन पर तो प्रभाव अच्छा पड़ा किन्तु समाज के स्थायी कार्यकर्त्तागण इस

कष्टसाध्य व्यवसाय को लेने के लिए तैयार नहीं हुए। यद्यपि जमीन आदि सबका मूल्य 8 लाख से कम नहीं था, यदि लेते तो इस समय एक करोड़ की सम्पत्ति कलकत्ता आर्य समाज के पास होती साथ में ऋषिदयानन्दकृत 'गौकरुणानिधि' में वर्णित 'गोकृषिरक्षिणिसभा' का एक आदर्श नमूना उपस्थित होता। आर्यसमाज कार्यकर्त्ताओं की इस आकर्मण्यता पर खेद सबको होगा। अन्त में पिताजी श्रीकृष्णगौशाला की सारी सम्पत्ति कलकत्ता पिंजरापोल सोसाइटि को अर्पण कर पृथक् तो हुए किन्तु सारे भारत में छाई गौहत्या की प्रवृति से उन्हें चैन कहाँ था, कलकत्ते का कार्य पिंजरापोल को सौंप दिया, पिंजरापोल के पास 8-10 हजार पशु तो थे किन्तु गोचर भूमि नाममात्र की भी नहीं थी, पिताजी द्वारा संग्रहीत जमीन में से केवल काँचरापाड़ा की जमीन से पाँजरापोल को 50 हजार रुपयों का सालाना लाभ रहा, गौओं के लिए घास चारा नहीं खरीदना पड़ा, इस लाभ से प्रभावित होकर कलकत्ता पिंजरापोल ने काँचरापाडा में और भी जमीन खरीद ली। तथा सोदपुर में भी पिताजी ने गोचर भूमि खरीद करवा दी।

कलकत्ते में पिताजी के सहायकों में अनेक धनिमानियों में निम्न श्रीमान सेठ मुख्य थे, राय बहादुर स्वर्गीय सेठ भगवानदास बागला की धर्म पत्नी, सेठ फूलचन्द जी टिकमाणि, सेठ ओंकारामल जेटिया, सेठ जुगलकिशोरजी बिड़ला, सेठ बलदेवदास दूध वाले और सिन्धी शुगर मर्चेनट सेठ परस राम पारूमल आदि-आदि अनेक सेठ एवं सहायकों के सहयोग से ही इतना सब गौरक्षा का कार्य कर पाये थे।

कलकत्ते के अतिरिक्त सारे भारत का दौरा किया जो दुर्दशा कलकत्ते में देखी वही दुर्दशा बम्बई में भैसों की देखी। वहाँ भी आन्दोलन किया नेताओं की तरह साधारण शान्तरूप में वे आन्दोलन नहीं रहते थे। उनका तौर तरीका बहुत ही उग्र था। वे काले कपड़े काला मुँह करके गौओं के झुण्ड को साथ ले बाजे गाजे के साथ बाजारों में आते। अपने विचित्र रूप से लोग को आकर्षित करते उन्हें गौ की ओर इशारा करके दिखाते कि जिसका तुम दूध पीते हो उसे माता समान पूजते हो, उसके गले पर कसाइयों की छूरी चलती है इसे तुम बचाते नहीं, रक्षा का उपाय नहीं सोचते इसलिए तुम्हारा मुँह भीतर से मेरे जैसा ही काला है सोचो समझो और मुझे गोरक्षा के कार्य में सहयोग देओ।

कोई कहता हासानन्द जयगोपाल, पिताजी उत्तर देते भाई कितनी गौओं की पालन करते हो तुम्हें तो जयकुत्तापाल, जयघोड़ा पाल और जय मोटरपाल कहना चाहिये। कलकत्ते की अपनी गौशाला से निवृत्त होकर गोपाल श्रीकृष्ण भगवान की लीला भूमि मथुरा की दशा देखकर हृदय वेदना फिर जाग उठी, मथुरा में गौवध के लिए सात कसाईखाने थे जहाँ गौमांस सूखाकर बर्माट्रेड के लिए भेजा जाता था इस बात की चर्चा पत्रों में चलाई, पूज्य मालवीय जी के आगे रखी, संसद में प्रश्न उठाया गया, उस समय

के किसी अधिकारी नामधारी शर्माजी ने उत्तर दिया कि बर्मा से भारत को चावल मिलते हैं यहाँ से भी तो कुछ जाना चाहिए, अर्थात् गौमांस भेजा जाता है।

मथुरा के दानी यात्रियों द्वारा जो गौएँ चोबों को दान में मिलती हैं, वह कसाइयों के यहाँ पहुँच जाती हैं, मथुरा के निकट कोई गोचर भूमि न होने से दूधवालों की गौयें भी कसाइयों के यहां पहुँच जाती हैं। अत: मथुरा वृन्दावन की गोचर भूमि की कमी को पूरा करने के लिये, गोचर भूमि की खोज करनी आरम्भ की, मथुरा और वृन्दावन के बीच का जंगल एक वैश्य लालाजी का मिल गया। उसे करीब एक लाख रुपये में खरीद कर लिया। 5 हजार अग्रिम देकर रजिस्टरी कराली। बाकी रुपयों के लिऐ देशव्यापी आन्दोलन आरम्भ हुआ कलकत्ते के सेठ तारा चन्द जी घनश्यामदासीजी के यहां मथुरा जमीन का खाता खोल दिया। स्व० श्री पूज्य मदनमोहन जी मालवीय उसके प्रधान बनाये गये। रुपये जमा होते रहे और उसे खरीद लिया गया।

3–4 वर्ष दौड़ धूप के बाद पिताजी संवत् 1987 में मथुरा नगरी में ही अपने एक साथी श्री वैद्य नटवरलालजी के यहां जीर्ण ज्वर से पीड़ित होकर बीमार पड़ गये, चौबेजी ने कलकत्ते मुझे सूचना भेजी, सूचना पाते ही मैं उन्हें कलकत्ते ले गया, उचित दवादारू करने पर भी मार्च 1931 मे वे नश्वर शरीर को छोड़ गोलोक पधारे।

जीवन काल में वे भारतीय नेताओं से मिले, सहयोग की प्रार्थना की लोकमान्य तिलक कांग्रेस के अवसर पर कलकत्ते पधारे, उनसे गौरक्षा में सहयोग देने की प्रार्थना की, इस पर तिलक महाराज ने कहा कि हम स्वराज्य का आन्दोलन कर रहे हैं। आप हमें स्वराज्य प्राप्ति में सहयोग देवें, 'एक साधे सब सधे सब साधे सब जाय' स्वराज मिलने पर, गौरक्षा जैसा आवश्यक और उपयोगी प्रश्न पाँच मिनट में हल कर देंगे और गौहत्या बंद कर देंगे।

खेद है कि तिलक महाराज गये, गांधीवादियों के हाथ में स्वराज आया किन्तु 8 वर्ष में न तो गौवध बन्द हुआ, गौरक्षा के विपरीत गौहत्या बढ़ गई साथ का गौग्रास स्वरूप गोचर भूमि भी सरकार छीनती जा रही है, अब तो परमात्मा ही मालिक है।

पिताजी को पूरे तौर पर सिवाय पूज्य मदनमोहन मालवीयजी के किसी ने साथ नहीं दिया। जीवनकाल पर्यन्त मालवीय जी की अध्यक्षता में मथुरा वृन्दावन को गोचर भूमि का आन्दोलन चलता रहा, पिताजी की मृत्यु के बाद वृन्दावन की जमीन का कुछ हिस्सा श्री जुगलकिशोर बिड़ला ने मालवीयजी से लेकर वहाँ बिड़ला मंदिर बनवाया, और जमीन का प्रबन्ध मथुरा की श्री कृष्णगौशाला के प्रबन्ध में सौंपा गया है। सुनते हैं वह जमीन गोचर भूमि के उपयोग में नहीं आ रही, वृन्दावन जाते हुए 'हासानन्द वर्मा गोचर भूमि' के नाम का पत्थर अवश्य लगा हुआ है।

गौशाला के प्रबन्धकों को चाहिये कि जिस निमित्त श्री स्वर्गीय हासानन्द वर्मा ने यह जमीन खरीदी थी उसी कार्य में लगाने का प्रयत्न करें।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर स्वाध्याय हेतु

आइए, इस बार जन्माष्टमी मनाते हुए श्रीकृष्ण का सच्चा स्वरूप जानें। गीता की शिक्षाओं को आत्मसात् करें तथा श्रीकृष्ण के जीवन से प्रेरणा लें। निम्न पुस्तकों को पढ़ें तथा प्रियजनों को इस अवसर पर उपहार स्वरूप दें।

1. योगिराज श्रीकृष्ण	लाला लाजपतराय	10.00
2. भगवान् श्रीकृष्ण और गीता उपदेश	स्वामी जगदीश्वरानन्द	15.00
3. श्रीमद्भगवद्गीता	स्वामी समर्पणानन्द	125.00
4. योगेश्वर श्रीकृष्ण	पं० चमूपति एम०ए०	95.00
5. श्रीमद्भगवद्गीता १००१ प्रश्नोत्तर	आचार्य भगवानदेव	150.00
6. श्रीकृष्णचरित	डॉ० भवानीलाल भारतीय	125.00
7. महापुरुषों के जीवन से सीखें	आचार्य अभिमन्यु	25.00
8. श्रीमद्भगवद्गीता	डॉ० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार	245.00
9. श्रीमद्भगवद्गीता-एक अध्ययन	श्री गुरुदत्त	125.00
10. महाभारतम्	स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती	900.00
11. वसुदेव	नरेन्द्र कोहली	250.00
12. श्रीमद्भगवद्गीता (३ भागों में)	भूपेन्द्रनाथ सान्याल	750.00
13. भगवद्गीता	डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन्	250.00
14. श्रीकृष्ण कथा		30.00
15. श्रीकृष्ण का महान् व्यक्तित्व	प्रो० रामविचार	10.00
16. मर्यादापुरुषोत्तम राम का महान व्यक्तित्व	प्रो० रामविचार	10.00
17. श्रीमद्भगवद्गीता	श्री लोकमान्य तिलक	400.00
18. श्रीमद्भगवद्गीता	श्रीपाद दामोदर सातवलेकर	1200.00
19. शान्तिदूत श्रीकृष्ण	स्वामी विद्यानन्द	300.00
20. द्रौपदी का चीरहरण और श्रीकृष्ण	स्वामी विद्यानन्द	65.00
21. कृष्ण की आत्मकथा (८ भागों में)	श्री मनु शर्मा	2400.00

ikfIr LFkku% fot;dqekj xkfoUnjke gklkuUn

4408] ubZ lMd] fnYyh&6] njHkk"k 23977216] 65360255

Email: ajayarya16@gmail.com Web: www.vedicbooks.com

अगस्त२०१४ Registered with Regn. of News Paper for India
वेदप्रकाश R.No. 627/57 Regd. No. DL(DG)-11/8030/2012-14, U(DGO) 01/2013-14 15.07.2013

Jko.kh io

वैदिक धर्म में स्वाध्याय की सर्वोपरि प्रधानता और महिमा बार-बार वर्णन की गई है। श्रावणी मनाने का एक उत्तम तरीका यह है कि वेदादि शास्त्रों का स्वाध्याय इस पर्व से अवश्य प्रारम्भ किया जाए। निम्नलिखित छोटी-बड़ी पुस्तकों से आप प्रेरणा लेकर इस प्रवृत्ति को बढ़ा सकते हैं:-

सहेलियों की वार्ता (वैदिक सिद्धान्तों पर)	पं० सुरेशचन्द्र वेदालंकार	25.00
आर्य पर्वपद्धति	पं० भवानीप्रसाद	90.00
वैदिक सुक्ति सरोवर	स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती	20.00
कुछ करो कुछ बनो	स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती	30.00
सामवेद शतकम्	स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती	18.00
ऋग्वेद शतकम्	स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती	18.00
यजुर्वेद शतकम्	स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती	18.00
अथर्ववेद शतकम्	स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती	18.00
वैदिक उदात्त भावनाऐं	स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती	25.00
वेद मंजरी	पं. रामनाथ वेदालंकार	125.00
स्वाधयाय सर्वस्य	स्वामी दीक्षानन्द जी	30.00
वैदिक दर्शन	पं० चमुपति एम.ए.	30.00
श्रुति सौरभ	पं०शिवकुमार शास्त्री	150.00
सत्योपदेशमाला	स्वामी सत्यानन्द	125.00
वैदिक विनय	आ० अभयदेव विद्यालंकार	250.00
ब्राहमण की गौ	आ० अभयदेव विद्यालंकार	175.00
वैदिक उपदेशमाला	आ० अभयदेव विद्यालंकार	20.00
वैदिक सम्पत्ति	पं० रघुनन्दन शर्मा	400.00
स्वाधयाय सन्दीप	स्वामी वेदानन्द तीर्थ	350.00
स्वाधयाय सन्दोह	स्वामी वेदानन्द तीर्थ	250.00
वैदिक सम्पदा	पं० वीरसेन वेदश्रमी	300.00
ऋग्वेद एक सरल परिचय	डॉ० भवानीलाल भारतीय	50.00
यजुर्वेद एक सरल परिचय	डॉ० भवानीलाल भारतीय	50.00
सामवेद एक सरल परिचय	डॉ० भवानीलाल भारतीय	50.00
अथर्ववेद एक सरल परिचय	डॉ० भवानीलाल भारतीय	50.00
ईश्वरीय ज्ञान वेद	प्रो० बालकृष्ण एम.ए.	200.00
स्वामी दयानन्द का वैदिक दर्शन	स्वामी सत्यप्रकाश	225.00
वैदिक चिन्तन धारा	डॉ० सुन्दरलाल कथुरिया	40.00
मत मतान्तरों का मूलस्रोत-वेद	पं० लक्ष्मण जी आर्योपदेशक	80.00
वेद मनीषा के अनमोल रत्न	महात्मा गोपाल स्वामी	65.00
वेदों की वाणी सन्तों की जुबानी	श्री मदन रहेजा	80.00

प्रकाशक-अजयकुमार, मुद्रक-अजयकुमार, स्वामी-अजयकुमार, गोविन्दराम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली-6, अजयकुमार द्वारा सम्पादित, प्रिंटर्स-अजय प्रिंटर्स, 1586/C-13, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32 में प्रिंट करा, वेदप्रकाश कार्यालय, 4408, नई सड़क, दिल्ली-6 से प्रसारित किया। न्यायक्षेत्र-दिल्ली।